आ नो भद्राः ऋतवो यन्तु विश्वतः
D.D.U. GORAKHPUR UNIVERSITY

नाथ पन्थ का वैश्विक प्रदेय

त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

20-22 मार्च, 2021

आयोजक

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर

सह-आयोजक

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
रोहतक, हरियाणा

योगेश्वर मठ, काद्री हिल
मैंगलोर, कर्नाटक

केयरबनिक मठ
केन्द्रपाड़ा, ओडिशा

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, गोरखपुर

दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ, गोरखपुर

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर

www.ddugu.ac.in

पृष्ठभूमि

नाथ पंथ की प्राचीनता अविवेच्य है। ऋग्वेद में नाथ शब्द का प्रयोग सृष्टिकर्ता, ज्ञाता तथा सृष्टि के नियंता के रूप में किया गया है। नाथ पंथ की परंपरागत मान्यता के अनुसार महायोगी गुरु गोरखनाथ सर्वकालिक एवं अयोजित हैं परंतु ऐतिहासिक दृष्टि से महायोगी गुरु गोरखनाथ का आविर्भाव काल सातवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच माना जाता है। भारत में शंकराचार्य के बाद महायोगी गुरु गोरखनाथ जैसा प्रभावशाली और युग प्रवर्तक व्यक्ति दूसरा नहीं हुआ।

शताब्दियों पूर्व से ही नाथ पंथ के योगी एवं साधक धर्म और योग के माध्यम से सामाजिक विकृतियों को मिटाने का अभियान चला रहे थे। वस्तुतः नाथ पंथ भारतीय इतिहास की वह प्रबल-पवित्र धारा है जो भारतवर्ष में अखंड रूप से शताब्दियों से यहाँ की सभ्यता, संस्कृति, जीवन, ज्ञान, दर्शन, साधना और साहित्य को संतृप्त करने के साथ-साथ इसे एक महान राष्ट्र के रूप में विकसित करने की दिशा में सतत प्रेरक और मार्गदर्शक की भूमिका का भी निर्वहन करती रही है।

यह त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी नाथ पंथ की इसी अजस्र-धारा के प्रकल्पों, प्रवाह एवं प्रभाव के विविध आयामों के अध्ययन एवं उसकी लोकोपकारिता के मूल्यांकन का एक विनम्र प्रयास है।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर को प्रदेश में स्वातंत्र्योत्तर काल के प्रथम विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त है। अपने स्थापना काल से ही यह विश्वविद्यालय अपने परिक्षेत्र के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्यों एवं परम्पराओं को अक्षुण्ण रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता रहा है।

गोरखपुर नगर में नाथ पंथ का सर्वोच्च अधिष्ठान-श्रीगोरक्षनाथ मंदिर-स्थित है जो महायोगी श्रीगोरखनाथ की तपोभूमि है और यही पर वे समाधिस्थ हुए। श्रीगोरक्षपीठ के पूज्य पीठाधीश्वरों ने समरस समाज के निर्माण में तथा शुचितापूर्ण राजनीतिक नेतृत्व में अभूतपूर्व योगदान दिया है। सम्प्रति उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के रूप में हम श्रीगोरक्षपीठ के लोक कल्याणकारी संकल्पों का मूर्तमान स्वरुप देख रहे हैं।

दीर्घकाल से गोरखपुर के बौद्धिक परिवेश में यह अन्तर्भूत भाव प्रवाहमान रहा है कि नाथ पंथ के दार्शनिक, सार्वभौमिक सिद्धांतों एवं अनुप्रयोगों को जन-जन तक संचारित करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन-केंद्र की स्थापना हो। विश्वविद्यालय में वर्ष 2018 में महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना इन्ही उद्देश्यों के साथ की गयी।

संगोष्ठी के उद्देश्य

- एक समरसतापूर्ण समाज के निर्माण में नाथ पंथ की भूमिका को रेखांकित करना।
- नाथ पंथ के विविध आयामों का अध्ययन करना एवं जनसामान्य के बीच इसकी लोकप्रियता पर प्रकाश डालना।
- भारतीय योग परम्परा व नाथ पंथ के अज्ञात पक्षों पर मंथन करना एवं लोगों के लिए इसकी सामाजिक प्रासंगिकता एवं हितों का आकलन करना।
- नाथ पंथ के दर्शन व साहित्य पर मनन-चिन्तन करना।
- नाथ पंथ के गौरवशाली इतिहास का अध्ययन करना एवं राष्ट्रनिर्माण में इसकी भूमिका को रेखांकित करना।
- नाथ पंथ के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक आयामों का अन्वेषण करना।
- नाथ पंथ से जुड़े स्थलों एवं पर्यटन मार्गों के माध्यम से सांस्कृतिक एकता के सूत्रों की तलाश करना।

संगोष्ठी : विमर्श संवर्ग

त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का विमर्श संवर्ग प्रमुखतः निम्नलिखित पांच खण्ड में परिकल्पित है.

लाइट्स साउंड प्रोग्राम, श्री गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर

भारतीय योग-परम्परा एवं नाथ पंथ

भारत में योग की धारणा अत्यन्त प्राचीन है। अथर्ववेद में योग द्वारा अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त करने का उल्लेख है। कठ, तैत्तरीय और मैत्रायणी उपनिषदों में योग का पारिभाषिक अर्थ में प्रयोग हुआ है। मैत्रायणी उपनिषद में षडंग योग का वर्णन उपलब्ध होता है। जैन धर्म और बौद्ध धर्म – दोनों ही योग की व्यवहारिक योग्यता में विश्वास रखते है। महर्षि पतंजलि के योगदर्शन में इतस्ततः विकीर्ण योग – सम्बन्धी विचारों का वैज्ञानिक ढंग से संग्रह किया गया है। कालान्तर में शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ ने जन – सामान्य के लिए नाथ पंथ का प्रवर्तन किया। उनके चिन्तन की पृष्ठभूमि चैतन्य की लोकातीत समाध्यवस्था थी। उनके मतानुसार शक्ति और शिव में कोई भेद नहीं है। शक्ति, प्रसर को तथा शिव, संकोच को भासित करते हैं। इन दोनों में जो योग स्थापित कर देता है, वह सिद्ध योगिराज हो जाता है। इस विमर्श खण्ड में नाथ पंथ तथा दर्शन के विविध प्रस्थानों में व्याख्यात योग के

विविध पक्षों पर पुष्कल मन्थन किया जाना संकल्पित है। इससे एक ओर जहाँ योग के अनेक अस्पष्ट पक्ष उदभासित हो सकेंगे, वहीं दूसरी ओर उनकी लोकोपकारिता तथा योग के माध्यम से नाथ पंथ के समाजोन्नयन का मूल्यांकन भी हो सकेगा।

नाथ पंथ : दर्शन और साहित्य

महायोगी गुरु गोरखनाथ से हिन्दू धर्म एवं दर्शन में एक नए युग का सूत्रपात हुआ था। आदि शंकराचार्य की तरह ही उनकी भूमिका भारतीय धर्म साधना एवं साहित्य में महत्वपूर्ण है। अपने समकालीन दार्शनिकों एवं धार्मिक शिक्षकों में गोरखनाथ उत्कृष्ट हैं। उन पर भारत के संत दर्शन का पूरा भवन खड़ा है। भारत की संत परम्परा महायोगी गुरु गोरखनाथ की ऋणी है। उन्होंने परम सत्य को पाने के लिए जितनी विधियां दी हैं यदि विधियों की दृष्टि से देखा जाए तो वे सबसे बड़े आविष्कारक हैं। उन्होंने साधना की नई विद्या सिखाई। उन्होंने जात-पात के भेदभाव के विरूद्ध भी आवाज उठाई। वह कहते थे कि कोई भी व्यक्ति उनकी शिक्षाओं का अनुसरण कर सकता है और संत बन सकता है। गोरखनाथ तपस्या के एक पंथ के संस्थापक थे जिसे नाथ पंथ कहा जाता है।

दार्शनिक दृष्टि से इस पंथ में पिंड और ब्रह्माण्ड को एक समान कहा गया हैं 'जोई पिंडे सोई ब्रह्मांडे' अर्थात जो पिंड में है वही ब्रह्मांड में है इसीलिए शरीर को जानना और उसकी साधना तथा सिद्धि से सम्पूर्ण ब्रह्मांड को जाना जा सकता है और उसकी सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। इस साधना पथ में जगत का मूल चेतन तत्व शिव है। शक्ति उसकी क्रियात्मक शक्ति है।

श्री गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर

एक ही प्रधान तत्व के दो रूप हैं शिव और शक्ति। इन्हीं के योग से सृष्टि होती है। शक्ति ही पाँच अवस्थाओं से होते हुए कुंडली या कुंडलिनी के रूप में प्राप्त हुई है। शंकराचार्य ने ब्रह्म को ही सत्य और जगत को मिथ्या माना था। गोरखनाथ ने इसका प्रतिवाद किया और उनके पंथ ने जगत को विश्वसनीय बनाया। जीव या पिंड के महत्व को प्रतिपादित किया।

गोरखनाथ जी के साहित्य में यदि उत्तर भारत की सांस्कृतिक विविधता का चित्र मिलता है तो बोली बानी की सुगंध भी है। जहाँ उन्होंने गुरु को महत्व दिया वही उन्होंने मन की शुद्धता एवं सात्विकता को केवल योगी के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण मनुष्य जाति के लिए आवश्यक माना। नैतिक एवं सात्विक भक्ति की ज्योति प्रज्जवलित करके भक्ति आंदोलन के लिए समृद्ध पृष्ठभूमि का निर्माण किया। इसीलिए भारत का भक्ति आंदोलन एवं हिन्दी भक्ति साहित्य गोरखनाथ जी की चेतना से सम्पन्न है।

राष्ट्र चिंतन, राष्ट्र निर्माण एवं नाथ पंथ

भारतीय संदर्भ में 'राष्ट्र' शब्द का अर्थ 'मातृभूमि' में अंतर्निहित है। एक लम्बी अवधि तक भारत अपनी ही मातृभूमि में पश्चिमी मॉडल वाले ऐसे राज्य के साथ संघर्ष करता रहा जिसे राष्ट्र की अभिव्यक्ति कदापि नहीं माना जा सकता लेकिन राष्ट्र की भावना अपने मूल विचारों को बनाए रखते हुए निरंतरता में जीवित रही। यह संभव हुआ क्योंकि इस राष्ट्र के अनेक महान आध्यात्मिक प्रणेताओं द्वारा राष्ट्र के मूल तत्वों को सुरक्षित बनाए रखने में महती भूमिका का निर्वाह किया गया। इस श्रेणी में नाथ पंथ ने राष्ट्र निर्माण को आम जनमानस से जोड़ने तथा समाज को एकता के सूत्र में बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नाथ पंथ ने पूरे उपमहाद्वीप में सामाजिक सामंजस्य स्थापित कर सांस्कृतिक चेतना को बनाए रखते हुए इस महान राष्ट्र के निर्माण के लिए जाति तथा समुदाय के सभी मतभेदों से ऊपर उठकर महती भूमिका का निर्वाह किया। राष्ट्र निर्माण में नाथ पंथ की भूमिका के गौरवशाली इतिहास का संग्रह अकादमिक जगत के लिए अपरिहार्य आवश्यकता है। यह विमर्श खण्ड इस भूमिका को अन्वेषित किए जाने का एक प्रयास है।

महायोगी गुरु गोरखनाथ जी

नाथ पंथ: सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक आयाम

मुख्य पुराणों, उप पुराणों, आगमो और तंत्रों की रचनावधि को भारतीय धर्माकाश में पौराणिक-आगमिक- तांत्रिक युग के रूप में उद्धृत किया जाता है। यह युग धार्मिक संघर्ष और समन्वय का युग था। इसी ऐतिहासिक कालखंड में योग-मार्गी शैव-सिद्धों ने अभूतपूर्व साधना-प्रधान संप्रदाय का संगठन किया जो भारतवर्ष में नाथ-संप्रदाय या नाथ-पंथ से अभिहित हुआ। नाथ पंथ की आध्यात्मिक परंपरा के अनुसार भगवान शिव ही योग-मार्ग के प्रथम नाथ हैं और आदिनाथ के रूप में पूजित हैं। आदिनाथ शिव द्वारा अवतरित नाथ पंथ के प्रथम मानव नाथ-गुरु सिद्धयोगी मत्स्येंद्रनाथ हैं और उन्होंने ही सर्वप्रथम आदिनाथ से ही हठविद्या (हठयोग) का उपदेश पाया। गोरखनाथ सिद्धयोगी मत्स्येंद्रनाथ के सुविख्यात शिष्य हैं जिन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा से नाथ-पंथ का विकास और संगठन किया और लोक-जीवन में शिवावतारी-महायोगी के रूप में प्रसिद्ध हुए। महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ की वृहत्तर भारत के धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में व्यवहृत-व्याप्ति रही है। महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ एवं उनके शिष्यों (नाथ योगियों) द्वारा विकसित क्रियायोग, काया-शोधन की प्रणाली पूर्णत: वैज्ञानिक और विश्व में समादृत है। संगोष्ठी का यह विमर्श खण्ड नाथ पंथ के सामाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आयामों की यात्रा का एक प्रयास है।

श्री आदिचुंचनगिरी मठ, कर्नाटक

नाथ पंथ : सांस्कृतिक स्थल एवं पर्यटन

महायोगी गोरखनाथ, नाथ पंथ के उन नौ सन्तों में से थे जिन्होंने भारत में सनातन हिन्दू धर्म (शैव सम्प्रदाय), बौद्ध एवं योग परम्परा के विचारों को जोड़ने का स्तुत्य कार्य किया है। नाथ पंथ से जुड़े महत्वपूर्ण स्थल भारत तथा अन्य देशों में भी फैले हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में श्रीगोरखनाथ मंदिर, देवीपाटन, बलिया में नाथ मंदिर, हरियाणा में अस्थल बोहर, हिमाचल प्रदेश में ज्वालामुखी (ज्वालादेवी) मंदिर, उत्तराखण्ड में हरिद्वार, नेपाल में कान्धेरा तथा पशुपतिनाथ, कर्नाटक में कादरी, पंजाब में जोगीटीला, पाकिस्तान में हिंगलाज मंदिर आदि को नाथ पंथ के संबंध में मानचित्रित किया जा सकता है। नाथ पंथ के सांस्कृतिक स्थलों एवं संबंधित पर्यटन प्रथाओं, परम्पराओं, मानदण्डों, मूल्यों, विश्वासों का क्षेत्र विशेष की रीति-रिवाजों से नाभि-नाल सम्बद्ध है । यह विमर्श सत्र नाथ पंथ से संबंधित धार्मिक स्थलों, पर्यटन पथों के माध्यम से सांस्कृतिक एकीकरण के सूत्र-संधान का अकादमिक अभियान है।

संगोष्ठी हेतु पंजीकरण

'नाथ पंथ का वैश्विक प्रदेय' विषयक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार-सह-संगोष्ठी का आयोजन ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों प्रणालियों से किया जा रहा है। संगोष्ठी में पंजीकरण के लिए पंजीकरण-लिंक व शुल्क विवरण निम्नवत है। शोध-पत्र प्रस्तुत करने के लिए संगोष्ठी के प्रस्तावित विमर्श-संवर्गो में किसी भी बिन्दु पर 300 शब्दों में सार और अधिकतम 3500 शब्दों में शोध पत्र एमएस वर्ड फॉर्मेट में कृतिदेव 010, फॉन्ट साइज 14 में शीर्षक, लेखक का नाम, पूरा पता, टेलीफोन नंबर के साथ पंजीकरण के पश्चात् संगोष्ठी के मेल nathpanth.mygsgsp@gmail.com पर भेजना होगा। सार प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 15 मार्च 2021 है।

रजिस्ट्रेशन शुल्क: छात्र - ₹ **500**; अन्य प्रतिभागी - ₹ **1000**

(वेबिनार-सह-संगोष्ठी के आमंत्रित-वक्ता / अतिथिगण रजिस्ट्रेशन शुल्क से मुक्त हैं। आमंत्रित वक्ता/अतिथिगण से निवेदन है कि रजिस्ट्रेशन फॉर्म के ट्रांजैक्सन डिटेल्स कालम में अपना नाम लिखें।

प्रतिभागीगण इन्टरनेट बैंकिंग/ पेटीएम/ गूगल पे/ अन्य किसी भी एप्प अथवा डिमांड ड्राफ्ट से निम्नवत बैंक विवरण पर रजिस्ट्रेशन-शुल्क प्रदान कर सकते है व ट्रांजैक्सन-विवरण निर्धारित ट्रांजैक्सन डिटेल्स कालम में पूर्ण कर देंगे -

Account Number: **50535336871**
Account Name: **Seminar Webinar Workshop**
IFSC Code: **IDIB000G616**
Bank's Name: **Indian Bank/Allahabad Bank**
University Branch, Gorakhpur-273 009, UP, India

रजिस्ट्रेशन लिंक: https://forms.gle/3cotSHFU9ojLtyTg9
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeLjxggFL0FG9fkc81p5_7CQNq66IsfaJ3XLVq_amQrIai7vQ/viewform

विशिष्ट वक्तागण

योगी आदित्यनाथ जी महाराज
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
महंत शिवनाथ जी महाराज, केयरबनिक मठ, केन्द्रपाड़ा, उड़ीसा
महन्त बालक नाथ जी, कुलाधिपति
बाबा मस्त नाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, सांसद अलवर
श्री श्री 1008 राज योगी राजा निर्मल नाथ जी महाराज
काद्री हिल्स, मैंगलोर, कर्नाटक
परमपूज्य जगदगुरु डॉ. निर्मलानन्द जी महाराज
पीठाधीश, श्रीआदि चुनचुनगिरी मठ, कर्नाटक
महंत चिन्तामणि योगी जी, कार्यकारी अध्यक्ष, हिन्दू विद्यापीठ, नेपाल
योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी, मॉस्को, रूस
योगी भगवान नाथ जी, स्पेन
योगी सतनाथ जी, चेक रिपब्लिक
योगी हालमन नाथ जी, आस्ट्रिया
योगिनी देवकी नाथ जी, ब्राजील
योगी कपिल नाथ जी, यू.एस.ए.
महंत शंकर नाथ जी, पाकिस्तान
डॉ. कुशल बी. चक्रवर्ती, बांग्लादेश
प्रो. नीम चन्द्र भौमिक, बांग्लादेश
डॉ. प्रहलाद देवनाथ, अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, बांग्लादेश
प्रो. माधव देशपाण्डे, अमेरिका
डॉ. विश्वानन्द पूटिया, मोका, मारीशस
हीक चियान गिखी, यूनिवर्सिटी ऑफ कम्बोडिया
महंत योगी कृपा नाथ, इजरायल
डॉ. वैदूर्य प्रताप शाही
वैज्ञानिक बोटानिकल इंस्टीट्यूट, के.आई.टी., जर्मनी
योगी धुनी नाथ, यूक्रेन
योगिनी आदिशक्ति, यूक्रेन
महंत योगी सोमवरनाथ जी, लातूर, महाराष्ट्र
योगी सूरजनाथ जी, गुरू गोरखनाथ मठ, महाराष्ट्र
महंत डॉ. विलास नाथ जी महाराज
ओम शिव गोरक्ष पंचायतन मन्दिर, ग्लेन, महाराष्ट्र
योगी भगवान नाथ, पूणे, महाराष्ट्र
परमपूज्य स्वामी रामदेव, योग गुरु
स्वामी जितेन्द्रानन्द सरस्वती जी, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति, गंगा सभा
स्वामी शान्तनु जी महाराज, सिद्धकुटी, देवबन्द, सहारनपुर
डॉ. जेम्स मल्लीनसन, एसओएएस विश्वविद्यालय, लन्दन
श्री अभिषेक प्रताप शाह, एम.पी. कपिलवस्तु, नेपाल
प्रो. रमेश चन्द्र सिन्हा
अध्यक्ष, भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद, नई दिल्ली
भव्य श्री, रिलीजन जर्नलिस्ट, फाउण्डर रिलीजन वर्ल्ड
डॉ. सुरेश लाल बरनवाल, आचार्य एवं संकायाध्यक्ष, योग एवं स्वास्थ्य संकाय, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज, हरिद्वार
डॉ. दीनानाथ राय, निदेशक-कुण्डलिनी योग रिसर्च इंस्टिट्यूट, लखनऊ
प्रो. राजेश सिंह, कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
गुरुजी डॉ. एच. आर. नगेन्द्र, कुलाधिपति
एस-व्यास योग विश्वविद्यालय, बंगलुरु
डॉ. बलवन्त जानी
कुलाधिपति, डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश
प्रो. बी.आर. रामकृणा, कुलपति
स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान विश्वविद्यालय, कर्नाटक
डॉ. के. सुब्रमण्यम, सलाहकार
एस-व्यास योग विश्वविद्यालय, बंगलुरु
डॉ. शारदा शंकर, योग समन्वयक
एस-व्यास योग विश्वविद्यालय, बंगलुरु
श्री के.के. सिंह, आयुष मंत्रालय
डॉ. ईश्वर वी. बसावरड्डी, निदेशक, मोरजी देसाई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ योगा, योग मंत्रालय, भारत सरकार
श्री अशीष गौतम, संस्थापक, दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार
प्रो. बी.आर. राम कृष्णा, कुलपति
स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान विश्वविद्यालय, कर्नाटक
प्रो. पृथ्वीश नाग, भूतपूर्व निदेशक, NATMO, भूतपूर्व कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
प्रो. सदानन्द गुप्ता, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
प्रो. नंद किशोर पाण्डेय, पूर्व निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी
कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश
प्रो. के.एन. सिंह, कुलपति, राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज एवं इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो. बी.एन. लाभ, कुलपति, नालंदा विहार विश्वविद्यालय, नालंदा
प्रो. हरमहेन्द्र सिंह बेदी
कुलाधिपति, हिमांचल प्रदेश, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, चंडीगढ
प्रो. कपिल कपूर, आचार्य, अंग्रेजी विभाग, सेण्टर फार लिंग्विस्टिक्स एवं इंग्लिश, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. संतोष शुक्ल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. अरविन्द पी. जमखेड़कर, अध्यक्ष, आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली
प्रो. बद्री नारायण
निदेशक, गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज
डॉ. उदय प्रताप सिंह, निदेशक, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, प्रयागराज
डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय
आयोजक सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली
डॉ. पूरण सहगल
निदेशक, मानव लोक संस्कृति, अनुष्का, मनसा, नीमच, मध्य प्रदेश
प्रो. प्रकाश खड्गे
संस्थापक-अध्यक्ष, लोक कला अकादमी मुम्बई, विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र
डॉ. कन्हैया सिंह
भूतपूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, वरिष्ठ साहित्यकार
आचार्य, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

आयोजन समिति

संरक्षक

योगी आदित्यनाथ जी महाराज

माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

अध्यक्ष

प्रो. राजेश सिंह

कुलपति

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

अन्तर्राष्ट्रीय
आयोजन समिति

महंत चिन्तामणि योगी जी
कार्यकारी अध्यक्ष, हिन्दू विद्यापीठ, नेपाल
योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी, मॉस्को, रूस
योगी भगवान नाथ जी, (इयान डंकन), स्पेन
योगी सतनाथ जी, चेक रिपब्लिक
योगी हालमन नाथ जी, (हलमट हरबर्ट), आस्ट्रिया
योगिनी देवकी नाथ जी
(डेनिसी अमेजोन्स मॉन्टेरियो), ब्राजील
योगी कपिल नाथ जी, यू.एस.ए.
महंत शंकर नाथ जी
सिन्ध प्रान्त रत्तोकोट, संगेर तलाका खिप्रो, पाकिस्तान
डॉ. कुशल बी. चक्रवर्ती, बांग्लादेश
प्रो. नीम चन्द्र भौमिक
अध्यक्ष, हिन्दू बुद्ध क्रिश्चियन ओकाया परिषद, बांग्लादेश
डॉ. प्रहलाद देवनाथ
अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, बांग्लादेश
प्रो. माधव देश पाण्डेय
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष
यूनिवर्सिटी आफ मिशिगन, अमेरिका
डॉ. विश्वानन्द पूटिया, मोका, मारीशस
हीक चियान गिखी, यूनिवर्सिटी ऑफ कम्बोडिया
महंत योगी कृपा नाथ, इजरायल
डॉ. वैदूर्य प्रताप शाही
वैज्ञानिक बोटानिकल इंस्टीट्यूट, के.आई.टी., जर्मनी
योगी धुनी नाथ, यूक्रेन
योगिनी आदिशक्ति, यूक्रेन

स्थानीय
आयोजन समिति

प्रो. यू.पी. सिंह
प्रो. अवधेश कुमार तिवारी
प्रो. एन.पी. भोक्ता
प्रो. चन्द्रशेखर
प्रो. शान्तनु रस्तोगी
प्रो. अजय सिंह
डॉ. महेन्द्र विक्रम शाही
डॉ. गणेश कुमार
प्रो. सुधीर कुमार श्रीवास्तव
प्रो. संदीप दीक्षित
प्रो. राजेश कुमार सिंह
प्रो. सतीश चन्द्र पाण्डेय
प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा
प्रो. विनीता पाठक
प्रो. दिव्या रानी सिंह
प्रो. विनय कुमार सिंह
डॉ. सचिन कुमार सिंह
श्री दीपेन्द्र मोहन सिंह
श्री प्रकाश प्रियदर्शी
श्री महेंद्र कुमार सिंह
श्री अंकित सिंह
प्रो. नन्दिता आई.पी. सिंह
प्रो. मुरली मनोहर पाठक
प्रो. द्वारका नाथ
प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी
प्रो. शिवा कांत सिंह
प्रो. रवि शंकर सिंह
प्रो. मानवेन्द्र प्रताप सिंह
प्रो. सुनीता मुर्मू
प्रो. दीपक प्रकाश त्यागी
प्रो. शिखा सिंह
प्रो अवनीश राय
प्रो. विजय चहल
डॉ. मनोज तिवारी
डॉ. प्रदीप राव
डॉ. राज शरण शाही
डॉ. रंजनलता
डॉ. लक्ष्मी मिश्रा
डॉ. कुलदीपक शुक्ल
डॉ. नरेन्द्र कुमार
डॉ. पद्मजा सिंह
डॉ. रुचिका सिंह